माता की करुण वेदना

इदं तु दुखं यदनर्थकानि मे, व्रतानि दानानि च संयमाश्च हि।
तपश्च तप्तं यदपुत्रकाम्यया, सुनिष्फलं बीजमिवोप्तमूषरे ।।

(बाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड २०/ ५२)

"माता कौशल्या राम के वनवास गमन का हाल सुनकर कहती है - "सबसे अधिक दुख की बात है कि पुत्र के सुख के लिए मेरे द्वारा किए गए व्रत, दान, संयम सब व्यर्थ हो गए । मैंने संतान हित कामना से जो तप किए थे, वे भी ऊसर भूमि में बोए बीज की भांति निष्फल हो गए।"

माता यशदेवी का पुत्र वियोग के कारण रो-रोकर बुरा हाल था। वह सोचने लगती-न जाने उसके पुत्र का क्या हाल हुआ होगा? वह कहाँ होगा? उसे कौन उठाकर ले गया होगा? वह जिन्दा भी है कि नहीं? कोई जानवर तो उसे नहीं खा गया? वह किन्हीं दुष्टों के हाथ न पड़ गया हो? इस तरह सोचते-सोचते वह मूर्च्छित हो जाती । उसके स्तनों पर दूध बन्द करने के लेप लगाए जाते पर मातृत्व के कारण दूध की धाराएँ बहने लगतीं । माँ की इस व्यथा को कोई नहीं समझ सकता?

माता के विशुद्ध हृदय में ईश्वरीय प्रेम का ही विकास होता है। यही कारण है कि संतान द्वारा नाना प्रकार के अत्याचार और दुर्व्यवहार को सहन करने के बाद भी माँ पुत्र के अहित की कामना नहीं करती । उसकी हार्दिक इच्छा रहती है कि उसकी संतान सदैव सुखी रहे और अधिक से अधिक उन्नति करे। माता यशदेवी को दुख इस बात का था कि उसके पुत्र को केवल कुरूप होने के कारण क्यों फेंक दिया गया? इस बालक ने किसी का क्या बिगाड़ा था जो इसे फिंकवा दिया गया। सुन्दर बच्चे भी तो अभागे हो सकते हैं। गर्भावस्था में उसने क्या-क्या सपने संजोए थे। इस दौरान उसने नियम-संयम, व्रत, उपवास किए थे कि उसका जो बच्चा होगा वह महान

बनेगा। आज मेरे सब जप-तप निष्फल हो गए। हा पुत्र, मेरे से तो वह गाय भी श्रेष्ठ है जो निर्बल होने पर भी अपने बछड़े के पीछे-पीछे चल पड़ती है। कोई जानवर भी अपने बच्चे के पास किसी को नहीं फटकने देता, वह भी उसकी रक्षा करता है। मैं तो पत्थर से भी कठोर हूँ, पत्थर भी नदी के थपेड़ों से टूट जाते हैं परन्तु आज मेरा हृदय इतने महान दुख-प्रहार को सहन करके भी टूक-टूक नहीं होता। मुझ जैसी पापिन और कौन होगी जिसने अपनी छाती का दूध पिलाए बगैर ही उसे फिंकवा दिया। ऐसा सोच-सोचकर उस माँ का व्या हाल हुआ होगा पाठक उसका अनुमान लगा सकते हैं।

प्रकृति की विचित्र विडम्बना और विधाता की क्रूर छलना है कि महान पुरुषों और अवतारों को जन्म देने वाली माताओं को सदैव पुत्र वियोग का दण्ड भोगना पड़ा है। भगवान राम ने चौदह वर्ष के वनवास में अनेक ऋषि मुनियों, संतों और भक्तों को अपार सुख पहुँचाया तथा राक्षसों का वध किया। परन्तु जन्म देने वाली कौशल्या माँ तो चौदह वर्ष तक तड़पती रही। भगवान कृष्ण अपनी लीलाओं से गोप गोपियों को सुख देते रहे पर उनको जन्म देने वाली माँ देवकी कंस की कारागार में पड़ी दारुण दुख भोगती रही। भगवान कपिल ने अपने आत्मज्ञान से अनन्त सांसारिक जीवों का मार्गदर्शन किया किन्तु देवहूति तो पुत्र वियोग में बिलखती रही। चैतन्य महाप्रभु तो प्रेमावतार के रूप में अपनी अलौकिक मस्ती, प्रेमोन्माद, नृत्य और संकीर्तन करते हुए असंख्य जीवों का उद्धार करते रहे परन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु को जन्म देने वाली शची माँ तो विरहानल में जलती रही। सुथरा जी जिन्ने समस्त भारत में प्रेम का प्रकाश फैलाया। कुरीतियों और अंधविश्वास के विरुद्ध आवाज उठाई। मुगलों के अत्याचारों का विरोध किया उसको जन्म देने वाली माता यशदेवी को पुत्र वियोग सहना पड़ा। महापुरुषों को जन्म देने की जो सजा विधाता ने और माताओं को दी वह आज माता यशदेवी को भी मिली।